1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इन्द्रो विश्वस्य राजति। सामवेद 456

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सारे विश्व का शासक और प्रेरक है।

The Bounteous Lord is the monarch and the motivation of the whole world.

वर्ष 39, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 फरवरी, 2016 से रविवार 7 फरवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, गौ सेवक, योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के गुरु

आचार्य बलदेव जी का पार्थिव शरीर पंचतत्त्व में विलीन

आर्य समाज की सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, गो भक्त, महर्षि दयानन्द के अनन्य सेवक, गुरुकुल परम्परा के पोषक आचार्य बलदेव जी का अंतिम संस्कार शुक्रवार 29 जनवरी को अपराह्न 12 बजे सिद्धांती भवन, दयानन्द मठ रोहतक में वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। अंतिम संस्कार में विशेष रूप से उनके शिष्य योगगुरु बाबा रामदेव, मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर, हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान, सुरेश चन्द्र आर्य, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, महामंत्री श्री विनय आर्य, उप मंत्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल, पश्चिमी दिल्ली वेदप्रचार मंडल के प्रधान श्री रवि चड्ढा, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के भारत भूषण आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के प्रधान आचार्य अंशुदेव के साथ-साथ दिल्ली से आर्य प्रकाशन के श्री संजीव आर्य, सुभाष कोहली एवं आर्य समाज सी 3 जनकपुरी की ओर से एक बस भरकर अंतिम संस्कार में आर्यजनों के अपार जन समूह के साथ सम्मिलित हुई।

आचार्य बलदेव जी अपने परम शिष्य जयपाल के साथ गुरुकुल कालवा से दिनांक 27 जनवरी 2016 की रात 1.30 बजे दयानन्दमठ रोहतक के लिए रवाना हुए थे। प्रात: 4 बजे दयानन्दमठ पहुँचे। शौच आदि से निवृत्त होकर 4.15 पर सैर के लिए निकले। धुंध के कारण किसी वस्तु से ठोकर लग जाने से आचार्य जी गिर गये जिससे उनके नाक, ठोडी व आँख पर गहरी चोट लग गयी और बनावटी दांत टूटकर मुंह के तलवे में घाव कर गये, जिस कारण उनके मुंह में गहरा घाव हो गया। अत्यधिक खून निकलने तथा खून का श्वास नली में चले जाने से उनका देहान्त हो गया। जबकि मैडिकल अस्पताल के डाक्टरों ने उनका नाम सुनते ही उनके प्राण बचाने का भरसक प्रयास किया। मुंह में टांके लगे होने पर भी मुंह से खून का रिसाव बन्द न होने के कारण डॉक्टरों का प्रयास असफल रहा। ...शेष पेज 4 पर

राम पर नहीं पाखंडियों पर मुकदमा हो!

–डॉ. विवेक आर्य

नारी के इस सम्मान जनक स्थान के ठीक विपरीत रामचरित मानस के सातवें कांड में पुरुष द्वारा नारी जाति पर संदेह करना, उसकी परीक्षा करना, उसे घर से निष्काशित करना यही दर्शाता हैं कि मध्य काल में भी नारी को हेय की वस्तु समझा जाता था। यह उसी काल का प्रक्षेप किया गया है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि रामायण का उत्तर कांड प्रक्षिप्त है।

बिहार के सीतामढ़ी जिले के एक वकील ने भगवान राम के खिलाफ केस दर्ज कराया है। वकील का कहना है कि माता सीता का कोई कसूर नहीं था। इसके बाद भी भगवान राम ने उन्हें जंगल में क्यों भेजा? कोई पुरुष अपनी पत्नी को कैसे इतनी बड़ी सजा दे सकता है? माता सीता ने पति के सुख-दुख में पूरी निष्ठा के साथ पत्नी होने का कर्त्तव्य निभाया, फिर भी उन्हें घर से निकाल दिया गया। भगवान राम ने यह सोचा भी नहीं कि घनघोर जंगल में अकेली महिला कैसे रहेगी? केस दर्ज करवाने वाले की मानसिक स्थिति क्या है? यह तो कहा नहीं जा सकता, किन्तु भगवान राम और लक्ष्मण के खिलाफ मुकदमा केवल समाज में लोक प्रसिद्धि पाने का तरीका मात्र है। कल कोई दलित समाज से सम्बंधित व्यक्ति शम्बूक वध को लेकर आपत्ति करेगा तो कोई केवट से चरण पादुका उठवाने को लेकर कूद पड़ेगा। इसलिए शंका के मूल कारण की जड़ में जाना आवश्यक है।

सीता की अग्निपरीक्षा एवं वन निर्वासन की घटना का वर्णन रामायण के सातवें उत्तर कांड में मिलता हैं। अगर समग्र रूप से सम्पूर्ण रामायण को देखें तो हमें यही सन्देश मिलता हैं कि श्री रामचंद्र जी ...शेष पेज 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, के यशस्वी प्रधान आचार्य बलदेव जी की स्मृति में

शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा

दिनांक: रविवार 7 फरवरी, 2016

विभिन्न माध्यमों से आपको विदित ही होगा कि आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, गौ भक्त, महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी, गुरुकुल परम्परा के पोषक आचार्य बलदेव जी का दिनांक 28 जनवरी, 2016 की प्रात:काल निधन हो गया।

पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में रविवार 7 फरवरी, 2016 को दोपहर 2:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक किया जा रहा है।

आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में सभी सदस्यों को एतदर्थ सूचना देवें एवं अधिकाधिक सदस्यों के साथ पहुंचकर आचार्य जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।

प्रकाश आर्य, मन्त्री,
सार्वदेशिक सभा
मो0: 9826655117

विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो0 : 9958174441

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के आगामी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	ऋषि बोधोत्सव	नव संस्येष्टि (होली)	आर्य समाज स्थापना दिवस
शुक्रवार, दिनांक 4 मार्च 2016, सायंकाल 3 से 7 बजे	दिनांक 7 मार्च 2016, प्रात: 8 से सायं 4 बजे	दिनांक 23 मार्च 2016, सायं 3 बजे	दिनांक : 8 अप्रैल 2016, प्रात: 8 बजे
स्थान: आर्य समाज मोती नगर, न.दि.-15	स्थान- रामलीला मैदान, दिल्ली	स्थान- रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली	स्थान- फिक्की सभागार, 12 खम्बा रोड, निकट मण्डी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली

समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों एवं समय में अपना कोई कार्यक्रम आयोजित न करें तथा अधिकाधिक संख्या में सभी कार्यक्रमों में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

स्वाध्याय

मंगल मिलन

यदग्ने क्या महं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिषः।। -ऋ. 8/44/23
ऋषिः-आङ्गिरसो विरूपः।।
देवता-अग्निः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय- हे नारायण! तुम्हारी मगंलकामना प्राणिमात्र के लिए अनवरत हो रही है, तुम्हारे आशीर्वाद प्रत्येक जीव के लिए अपने प्रत्येक पुत्र के लिए-एक-समान बरस रहे हैं, फिर भी ये आशीर्वाद हमें लगते नहीं हैं, हम पर अपना प्रभाव नहीं डालते इसका कारण यह है कि हम ही अपने-आपको इनसे वंचित रख रहे हैं। स्वार्थ, अहंकार, अस्मिता से हमने अपने-आपको ऐसा बांध लिया है, ऐसा लपेट लिया है कि हम वास्तव में तुम्हारे परमनिकट होते हुए भी तुमसे इतने दूर हो गये हैं कि हम पर तुम्हारी आशीर्वाद-वर्षा का कुछ भी प्रभाव नहीं होता। हे मेरे प्यारे! प्रकाशमय देव! हममें दूरी करने वाला, हमें पृथक् रखने वाला, यह आवरण अब सहा नहीं जाता। अब तो यह पर्दा फट जाए, यह आवरण हट जाए और मैं तू हो जाऊं या तू मैं हो जाए, तो मुझ पर बरसाये गये जीवन-भर के तेरे सब आशीर्वाद एक क्षण में सफल हो जाएं तथा जीवन - भर में तुम्हारे प्रति की गई मेरी सब प्रार्थनाएं एक पल में पूरी हो जाएं। हे प्रभो! वह दिन कब आएगा, जब मैं तेरे ध्यान में मग्न होकर अपने - आपको खो दूंगा और दूसरी ओर तुम अपने परम प्यारे पुत्र को अपनी गोद में आश्रय दे दोगे; जब मेरा आत्मा अपने परम आत्मा को पा जाएगा और दूसरे शब्दों में हे परमात्मन्! तुम अपने एक चिरवियुक्त अंग को फिर अंगीकार कर लोगे; जब मेरी आत्माग्नि तुम्हारी बृहत्-अग्नि में जाकर 'मैं' को नष्ट कर देगी अथवा जब तुम्हारे द्वारा मेरे स्वीकृत हो जाने से 'तुम' जाता रहेगा? तब मेरी कोई प्रार्थना न रहेगी, क्योंकि तब मेरा कोई स्वार्थ व कामना न रहेगी और इसलिए तब तुम्हारा कोई आशीर्वाद भी बाकी न रहेगा। उस मंगल-मिलन में तुम्हारे सब आशीर्वाद मूर्त्तिमन्त, सत्य, सफल हो जाएंगे। जीवन-भर में जो-जो मैंने तुमसे भक्तिमय प्रार्थनाएं की हैं और उनके उत्तर में, उनकी स्वीकृति में, तुमसे मैंने जो नाना आशीर्वाद पाये हैं, वे सब के सब आशीर्वाद अन्ततः इसी महान् मंगल मिलन के लिए थे। मेरी सब प्रार्थनाओं की एक इच्छा और तुम्हारे मेरे प्रति सब आशीर्वचनों की एक इच्छा, यह मिलन ही थी। तुम्हारी मेरे कल्याण की सब-की-सब कामनाएं, सब आशीर्वाद, इस आत्मप्राप्ति में एकदम पूरे हो जाते हैं, क्योंकि यही मेरा सबसे बड़ा कल्याण है, कल्याणों का कल्याण है, जिसमें सब कल्याण समा जाते हैं। अहो! वह मंगल-मिलन, वह महान् मिलन!

शब्दार्थः- अग्ने-हे प्रकाशस्वरूप! यत् अहं त्वं स्याम्-जब मैं तू हो जाऊं वा घ-या त्वं अहं स्याः-तू मैं हो जाए तो ते इह आशिषः- तेरे इस संसार के वे सब आशीर्वाद सत्याः स्युः- सत्य, सफल हो जाएं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

नारी नहीं, सोच अपवित्र है!

संसार की किसी भी धर्म पुस्तक में नारी की महिमा का इतना सुंदर गुण-गान नहीं मिलता जितना वेदों में मिलता है किन्तु अभी भी कुछ समाज और धर्म में नारी को अपना स्थान बनाने के लिए आन्दोलन करना पड़ रहा है, कुल की रक्षक कुल देवी को अपने अधिकारों अपनी धार्मिक, सामाजिक स्वतंत्रता तो दूर की बात अपनी आस्था के लिए प्रदर्शन करना पड़ रहा है। आखिर क्यों? क्या भगवान सिर्फ चंद गिने चुने तथाकथित धार्मिक बाबाओं, मौलानाओं, पादरियों की जागीर है?

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।। यह मनुस्मृति का श्लोक है अर्थात् जिस कुल में नारियों की पूजा, अर्थात् सत्कार होता है उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होती है और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वहां उनकी सब क्रिया निष्फल है। किन्तु इन से दूर यह नकली धर्म गुरु वेद व अन्य ग्रन्थों का नाम लेकर अपना सिक्का/व्यवसाय चला रहे हैं।

कभी-कभी तो लगता है कि जैसे अभी तक धर्म इनका गुलाम हो? क्या धार्मिक आस्था निज मनोरंजन, निज स्वार्थ, और निज उपासना के लिए बनाई गयी व्यवस्था है? इस हफ्ते दो समाचार सामने आये एक तो महाराष्ट्र में शनि शिगणापुर के चबूतरे में पूजा करने के अधिकार के लिए महिला श्रद्धालुओं को अभियान चलाना पड़ रहा है। दूसरा मुंबई में हाजी अली दरगाह के महिला प्रतिबंधित क्षेत्र में प्रवेश की मांग कर रही मुस्लिम महिलाओं ने गुरुवार को प्रदर्शन किया। दोनों जगह कारण कुछ इस प्रकार के बताये गये जिसकी वजह से इन स्थानों पर महिलाओं के प्रवेश को प्रतिबंधित किया गया है; मौलाना अंसार रजा के अनुसार इस्लाम के अन्दर मजार पर महिलाओं का जाना वर्जित है, शरियत के अनुसार यह गुनाह है, इसका कारण भी उन्होंने कुछ अजीब बताया कि यदि इस्लाम में महिलाएं मस्जिद या मजार पर जायेंगी तो वहां उपस्थित पुरुष समाज की नियत खराब होती है जिस कारण महिलाओं पर पाबंदी है। दूसरी तरफ शनि महाराज के चबूतरे को लेकर मंदिर प्रशासन का कहना है कि शनि चबूतरा पवित्र है जो महिलाओं के प्रवेश से अपवित्र हो जायेगा! आखिर क्यों? क्या नारी माँ के रूप में अपवित्र है? या नारी बहन के रूप में अपवित्र है? पत्नि या बेटी के रूप में अपवित्र है? यदि इनमें से कोई नहीं तो धर्म के ठेकेदारों को कोई हक नहीं है नारी को अपवित्र समझने का! कोई हक नहीं है उन्हें धार्मिक स्थानों पर जाने से रोकने का नारी ही तो सभ्यता की जननी है।

कोई मुझे बताये यह आस्था पर कैसा कब्जा है? जैन धर्म के अनुसार तो नारी मोक्ष की अधिकारी ही नहीं है। उसे पुरुष की तरह जन्म लेना पड़ेगा। जैनियों के चौबीस तीर्थकर में एक तीर्थकर स्त्री है। नाम था मल्ली बाई उन्होंने उस का नाम बदल कर मल्ली नाथ कर दिया क्योंकि वे कहते हैं कि नारी मोक्ष की उत्तराधिकारी नहीं है। क्या मोक्ष पर भी पुरुष वर्ग का कब्जा है? इसे अजीब दृष्टिकोण कहें या विक्लांग मानसिकता? किन्तु एक बात तो तय है कि समाज की तरह ही मजहब पर भी पुरुष वर्ग का कब्जा है! दुनियां में वैदिक धर्म को अलग रखें तो विरला ही कोई पंथ होगा जिसने नारी को इज्जत दी हो। जहाँ पूरब में आज भी पुरुष समाज नारी को दासी समझता है वहीं पश्चिमी देशों की हालत तो और भी बदतर है। वहां नारी को दिल बहलाने की वस्तु समझा जाता रहा है। हमेशा पूरे विश्व में नारी को लेकर हालात इतने बदतर रहे या कहें सोच इतनी निरर्थक रही कि यदि किसी पुरुष को नारी जैसे नाम से भी पुकार दिया तो अपमान समझा जाता रहा है। तथाकथित बाबाओं ने, मौलानाओं ने नारी का उपहास उड़ाया, समाज ने नारी का उपहास उड़ाया, कुछ धर्म गुरु नारी से बचने की सलाह देते रहे उसे हर एक रिश्ते में आदर चाहिए जब वो बेटी बनकर, बहन बनकर अपना स्नेह लुटा सकती है, जब वो पत्नी बनकर प्रेम और माँ बनकर ममता का खजाना लुटी सकती है तो फिर उसके प्रति ये दोगली भावना क्यों? ईश्वर सबका है एक माँ की तरह वो भेदभाव नहीं करता तो फिर ये लोग कौन हैं, जो धर्म और परम्पराओं पर कब्जा करके बैठ गये हैं?

बहुत पहले एक कथन सुना था कि परम्पराएँ फल की तरह होती है, जब जन्मते है खट्टे और कड़वे होते है, बड़े होने पर पकने पर स्वादिष्ट और मीठे लगते हैं किन्तु जो बच जाते हैं वो सड़ जाते हैं। आज बहुत सारी धार्मिक परम्पराएँ सड़ गयी हैं उन्हें बाहर का रास्ता दिखा देना चाहिए और हमारा मानना है यह काम धार्मिक गुरु करें तो ही अच्छा है वरना कभी जनता संस्कृति के पेड़ से छेड़छाड़ न कर बैठे? क्योंकि जिस प्रकार गुरुवार को मुस्लिम महिला समूहों से जुड़े कई कार्यकर्त्ताओं ने हाथों में तख्तियां लेकर ऐतिहासिक दरगाह के मुख्य स्थल में महिलाओं को प्रवेश देने की मांग की। उसे देखकर लगता है आने वाले समय में नारी को समाज से पहले धर्म के ठेकेदारों से धार्मिक समानता की जंग जीतनी पड़ेगी?

-सम्पादक

बोध कथा

आत्मिक संसार की कहानी

हमारे टैगोर जी थे न! महाकवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ठाकुर, जिनका लिखा हुआ 'जन-गण-मन' हमारे देश का राष्ट्रीय गीत बन गया है और जिन्हें साहित्य के लिए संसार का सबसे बड़ा पुरस्कार 'नोबेल प्राइज' मिला था, एक बार लाहौर आये ता मैं उन्हें मिला। कितनी सुन्दर, शान्त मूर्ति थी उनकी! बिलकुल एक ऋषि से प्रतीत होते थे वे। लाहौर में लाला धनीराम भल्ला के यहां वे ठहरे थे।

महाकवि ने भल्ला जी की कोठी में उपनिषदों की कथा आरंभ की। टैगोर जी अंग्रेजी में बोलते थे। पंडित ऋषिराम जी हिन्दी में उसका अनुवाद करते थे। एक बार पहुंचा तो वे कर्म-सिद्धान्त को समझाने के लिए अपनी एक कविता कह रहे थे। कविता बंगला में थी। इसका अनुवाद वे अंगेजी में सुना रहे थे। कविता का शीर्षक था-बन्दी। यह बन्दी जेल में पड़ा है, इसके चारों ओर ऊंची-ऊंची दीवारें हैं। हाथों में हथकड़ियां, पावों में बेड़ियां। दीवार में एक छोटी-सी खिड़की है, जिस पर लोहे की मोटी-मोटी सलाखें लगी हैं।

कैदी बाहरवालों को देख सकते हैं, अन्दर जाने का मार्ग नहीं।

कवि इस बन्दी के पास पहुंचता है। पूछता है- ''बन्दी! तुझे किसने कैद किया है? किसने ये दीवारें खड़ी की हैं? किसने ये जंजीरें बनवाई हैं? किसने इन जंजीरों से तुझे जकड़ दिया है?''

और बन्दी सिर झुकाकर कहता है- ''मैंने स्वयं ही अपने-आपको कैद किया है। मैंने स्वयं ही इन दीवारों का निर्माण किया है। मैंने स्वयं ही इन जंजीरों को बनाया है। स्वयं ही अपने को इनमें जकड़ लिया है, परन्तु अब स्वयं ही विवश हो गया हूं।''

यह है आत्मिक संसार की कहानी! यह ठीक है कि तुम विवश हो गए हो, परन्तु किसी दूसरे ने तुम्हें विवश नहीं किया। किसी दूसरे ने तुम्हारे लिए जेल नहीं बनाई। इस जाल ने तुमको नहीं पकड़ रखा, तुमने इस जाल को पकड़ रखा है।

यह है मोह का जाल जिसमें तुमने स्वयं को जकड़ रखा है। इस जाल से बाहर आये बिना मानसिक तप तुमसे होगा नहीं। कल्याण का मार्ग तुम्हें मिलेगा नहीं।

2 फरवरी जन्मदिवस पर विशेष

शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी श्रद्धानन्द

पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिलान्तर्गत तलवान ग्राम में लाला नानक चन्द जी के परिवार में 2 फरवरी 1856 को एक ज्योतिपुंज उदय हुआ जो आगे चलकर महान यशस्वी स्वामी श्रद्धानन्दजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आपके पिता लाला नानक चन्द ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित यूनाईटेड प्रोविन्स (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में पुलिस अधिकारी के रूप में सेवारत थे। स्वामी जी का बचपन का नाम वृहस्पति और मुंशीराम था। पिता का स्थानान्तरण अलग-अलग स्थानों पर होने के कारण मुंशीराम जी की प्राथमिक शिक्षा भलीभांति नहीं हो सकी। एक बार की बात है कि आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिकधर्म के प्रचारार्थ बरेली पहुंचे। पुलिस अधिकारी नानक चन्द अपने पुत्र मुंशीराम को साथ लेकर स्वामी दयानन्द जी का प्रवचन सुनने पहुंचे। युवावस्था तक मुंशीराम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को दृढ़ ईश्वर विश्वासी और वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया। जिसके बाद वे आर्य समाज में पूर्णत: सक्रिय हो गये। मुंशीराम जी ने वकालत पास करने के बाद काफी शोहरत प्राप्त की। इसी बीच आपका विवाह श्रीमती शिव देवी के साथ हुआ। जब आपकी आयु 35 वर्ष की थी उसी समय शिवा देवी जी का स्वर्गवास हो गया। इस समय तक स्वामी जी दो पुत्र और दो पुत्रियों के पिता बन चुके थे। वर्ष 1917 में आपने सन्यास धारण कर लिया और स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए।

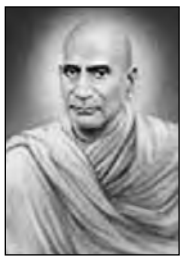

वर्ष 1901 में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अंग्रेजों द्वारा जारी शिक्षा पद्धति के स्थान पर वैदिक धर्म तथा भारतीयता की शिक्षा देने वाले संस्थान गुरुकुल कांगड़ी की हरिद्वार में स्थापना की। उन्हीं दिनों गांधी जी अफ्रीका में संघर्षरत थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल के छात्रों से 1500 रुपये एकत्र कर गांधी जी को भेजे। गांधी जी जब अफ्रीका से भारत लौटे तो वे गुरुकुल पहुंचे तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा राष्ट्रभक्त छात्रों के समक्ष नतमस्तक हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया था और बहुत पहले यह भविष्यवाणी कर दी थी कि वे आगे चलकर बहुत महान व्यक्ति बनेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पत्रकारिता में भी कदम रखा। वे उर्दू तथा हिन्दी भाषाओं में धार्मिक व सामाजिक विषयों पर लिखते थे। बाद में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का अनुसरण करते हुए उन्होंने देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को प्राथमिकता दी। आपका पत्र 'सद्धर्म' जो पहले उर्दू में प्रकाशित होता था और बहुत लोकप्रिय था। किन्तु बाद में उन्होंने इसको उर्दू के स्थान पर देवनागरी लिपि में निकालना आरम्भ किया। इसके आपको आर्थिक नुकसान भी हुआ। आपने हिन्दी भाषा में 'अर्जुन' और उर्दू भाषा में 'तेज' नामक पत्र भी प्रकाशित किये। जलियांवाला काण्ड के बाद अमृतसर में कांग्रेस का 43वां अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में अपना भाषण हिन्दी में दिया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किये जाने का मार्ग प्रशस्त किया।

आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़-चढकर भाग लिया। गरीबों और दीन-दुखियों के उद्धार के लिये काम किया। स्त्री शिक्षा का प्रचार किया। वर्ष 1919 में स्वामी जी ने दिल्ली में जामा मस्जिद क्षेत्र में आयोजित एक विशाल जनसभा में भारत की स्वाधीनता के लिए प्रत्येक नागरिक को प्रांतीय मतभेद भुलाकर एकजुट होने का आह्वान किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने जब कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं को 'मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीति' अपनाते देखा तो उन्हें लगा कि यह नीति आगे चलकर राष्ट्र के लिए विघटनकारी सिद्ध होगी। इसके बाद कांग्रेस से आपका मोहभंग हो गया। दूसरी ओर कट्टरपंथी मुस्लिम तथा इसाई हिन्दुओं का मतान्तरण कराने में लग गये। स्वामी जी ने असंख्य व्यक्तियों को आर्य समाज के माध्यम से पुन: वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। उन्होंने गैर-हिन्दुओं को पुन: अपने मूल धर्म में लाने के लिए शुद्धि नामक आन्दोलन चलाया और बहुत से लोगों को पुन: हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। स्वामी श्रद्धानन्द पक्के आर्य समाजी थे किन्तु सनातन धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान पंडित मदनमोहन मालवीय और पुरी के शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ को गुरुकुल में आमंत्रित कर छात्रों के बीच उनका प्रवचन कराया था।

23 दिसम्बर 1926 को नया बाजार स्थित आपके निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी धर्म-चर्चा के बहाने आपके कक्ष में प्रवेश कर गया और स्वामी जी को गोली मारकर इस महान विभूति की हत्या कर दी। हत्यारे अब्दुल रशीद को बाद में फांसी की सजा दी गयी।

पुस्तक समीक्षा

पुत्रेष्टि यज्ञ रहस्य

समीक्षक- पं. सत्यवीर शास्त्री

पुस्तक का नाम : पुत्र-पुत्री कामेष्टि
लेखक : पं. सत्यवीर शास्त्री, प्रधान आ.प्र. सभा. मध्य प्रदेश-विदर्भ
मूल्य : 100/-

महाराज दशरथ ने पुत्र की चाह से ही एक के बाद एक तीन विवाह किये थे। तीनों रानियां एक से बढ़कर एक सुन्दर रूपवती थीं। फिर भी संतान एक भी न हुई। महर्षि शृंगी ने राजा से पुत्रेष्टि यज्ञ की सारी विधियां करवाई। परिणाम में राजा के चार पुत्र हुए थे जो राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न नाम से प्रसिद्ध हैं। तीनों में से कोई भी एक रानी यदि बांझ होती तो उसे पुत्र नहीं होता। इससे रहस्य निकला कि राजा में ही कोई शारीरिक दोष था जिस कारण राजा को बच्चे प्राप्त नहीं हो रहे थे। शृंगी ऋषि ने यज्ञ द्वारा राजा की शारीरिक कमी को दूर करवा दिया और राजा को पुत्र रत्न प्राप्त हुए।

''पुत्र-पुत्री-कामेष्टि'' इसी आधार पर पुस्तक की रचना ऐलोपैथिक चिकित्सक, आयुर्वेदिक चिकित्सक, रसायन शास्त्र के प्रोफेसर और पं. सत्यवीर शास्त्री ने मिलकर की है। पुस्तक की तीसरी आवृत्ति प्रकाशित हुई है।

पुस्तक के अनुसार 'यज्ञ' केवल धार्मिक विधि ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक चिकित्सा विधि भी है। महर्षि दयानन्द जी ने पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि में लिखा है ''यज्ञ से सुगन्ध कारक, पुष्टिकारक, रोगनाशक और कीटाणुनाशक चार प्रकार की वायु निकलती है जो सम्पूर्ण निर्जीव-सजीव प्राणियों को प्रभावित करती है।

भोपाल (मध्य प्रदेश) की गैस दुर्घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि, मनुष्य के शरीर पर वायु का सबसे शीघ्र प्रभाव पड़ता है। अन्न के बिना मनुष्य दस दिन जीवित रहता है, पानी क बिना सात दिन लेकिन वायु के बिना दस मिनट भी जीवित नहीं रहता है। गौ घृत से 02, 03, अर्थात् ऑक्सीजन एवं ओजोन मिलते हैं। इसीलिए वायु को 'प्राण' कहा गया है।

पुत्रेष्टि यज्ञ पुस्तक में हवाओं का वर्गीकरण लिखकर कौनसी मानवोपयोगी और कौन सी हानिकारक है। यह दर्शायागया है। यज्ञ करने से प्रथम धुआं फिर गैस निकलती है। अग्नि क्या है? 'अग्नि' कोई वायु रूप, द्रव्य रूप, रस रूप, ठोस, मिश्रण नहीं है और इसका कोई विज्ञान सूत्र भी नहीं है। अग्नि एक शक्ति (पावर) है। अग्नि सम्पर्क में आई वस्तु को जलाकर, धुआं, गैस और भस्म रूप में परिवर्तित कर देती है।

आयुर्वेद के मुताबिक संतान न होने के अनेक कारण हैं। इन कारणों में स्त्रियों में उन्नीस प्रकार के और पुरुषों में सात प्रकार के दोष प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। पुत्रेष्टि यज्ञ में डॉक्टर से जांच करवाके औषधि सेवन से शारीरिक दोष एवं यज्ञ से मानसिक दोषों को दूर कर पति-पत्नी को संतान पैदा करने योग्य बनाया जाता है।

यज्ञ में कौन-कौन से पेड़ की समिधाएं उपयोग में लाई जाएं? किन-किन औषधियों से सामग्री बनाई जाए? कौन से वेद की किन ऋचाओं से आहुति दी जाएं? पायस (खीर) कैसे बनाई जाए। इन सभी बातों का दिग्दर्शन पुस्तक में किया गया है।

शतपथ (ब्राह्मण) ग्रंथ में यथार्थ लिखा है कि ''यज्ञो वैकल्पतरु अर्थात् इच्छित फल देने वाला पेड़। संसार में इच्छित फल देने वाला आंखों से दिखाई देने वाला पेड़ कही भी नहीं है। यही यज्ञ ही कल्पतरु है, जो सभी कामनाओं को पूरा करा देता। इसी यज्ञ रूपी कल्पतरु के नीचे बैठकर आर्यों ने अपनी मनोकामनाओं को पूरा कराना चाहिए।

उपरोक्त पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आकर्षक वैदिक शगुन लिफाफे

नये डिजाइनों में उपलब्ध

बिना सिक्के वाला 300/- रुपये सैकड़ा

सिक्के वाला 500/- रुपये सैकड़ा

प्राप्ति स्थान:

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें

मॉरीशस में वेद प्रचार कर स्वदेश लौटे आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान एवं यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को आर्य समाज रमेश नगर द्वारा दिनांक 17 जनवरी 2016 को 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित किया गया। शास्त्री जी को यह सम्मान मॉरीशस में सफलता पूर्वक वेद प्रचार कर स्वदेश लौटने एवं वैदिक सिद्धांतों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वैदिक सत्संग समारोह में प्रदान किया गया। सम्मान के रूप में शास्त्री जी को शाल, सम्मान

राशि एवं प्रशस्ति पत्र आर्य समाज के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रि. अरुण आर्य जी द्वारा प्रदान किया गया।

-नरेन्द्र आर्य 'सुमन'

सत्यार्थ प्रकाश में छूट देने हेतु दान देने वालों की सूची

गतांक से आगे

79. आर्य समाज पंजाबी बाग पश्चिम	11000/-
80. वीनस ट्रेडर्स	1100/-

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश सब्सिडी के लिए धन्यवाद

आर्य समाज पटपड़गंज के वरिष्ठ सदस्य श्री बलदेव राज महाजन जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश उर्दू पर 20 रुपए प्रति सब्सिडी दिये जाने पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद। श्री महाजन जी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि आगामी पुस्तक मेलों में जितने भी उर्दू सत्यार्थ प्रकाश वितरित किए जाएंगे उन पर 20 रुपए प्रति पुस्तक की सब्सिडी वे देते रहेंगे। आप भी उर्दू सत्यार्थ प्रकाश को अल्प मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को सहयोग प्रदान करें।

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड के संयुक्त तत्वावधान में

भारत एकात्मक शोभा यात्रा सम्पन्न

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड के तत्त्वावधान में दिनांक 31 जनवरी 2016 को 'ग्रेट इण्डिया कार्निवल' (भारत एकात्मक यात्रा) के नाम से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। लगभग 12 किमी. के इस जुलूस में आर्य समाज बाहरी रिंग रोड की झांकी घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ विषय को सजीव प्रस्तुत किया गया था। शोभायात्रा का नेतृत्व आर्य समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश ने किया। शोभायात्रा का लगभग 75 स्थानों पर रोक-रोककर स्वागत किया गया। सबसे सुन्दर और भव्य झांकी फूलों से सजी आर्य समाज की झांकी थी। जिसका निमार्ण आर्य समाज के प्रधान श्री नरूलाजी एवं उसके सहयोगियों ने

किया था। आर्यवीर दल के लगभग 40 सदस्यों का प्रदर्शन अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

-वेद प्रकाश, प्रधान

योग शिविर का आयोजन

आनंदधाम उधमपुर में दिनांक 17 से 24 अप्रैल 2016 तक योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में महात्मा भगवान देव चैतन्य, आचार्य संदीप आर्य व अन्य विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। इच्छुक शिविरार्थी अपने पंजीकरण एवं विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें- भारत भूषण आनंद मो. 09419107788

पृष्ठ 1 का शेष

आचार्य बलदेव जी ...

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज का जन्म ग्राम सरगथल, जिला सोनीपत में श्री गूगनसिंह जी के घर 25 अक्तूबर 1932 को हुआ था। आचार्य जी का जीवन त्याग एवं सदाचार से भरा रहा। उन्होंने जाट कालेज रोहतक से एस.एस.सी. तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् पूज्य आचार्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल झज्जर) के सान्निध्य में रहकर 1962 से 1971 तक गुरुकुल झज्जर तथा बाद में वर्ष1971 से 2000 तक गुरुकुल कालवा में श्रद्धापूर्व कार्य किया। वर्ष 1962 में गुरुकुल झज्जर में स्थायी रूप में आने से पूर्व आचार्य बलदेव जी ने आचार्य भगवान देव जी के आदेश से गुरुकुल सिरसागंज में जाकर व्याकरण का अध्ययन किया। तत्पश्चात् गुरुकुल झज्जर के स्नातक पं. राजवीर शास्त्री से बेरी में रहकर इन्द्रदेव ब्रह्मचारी के साथ व्याकरण महाभाष्य की शिक्षा क्रियात्मक रूप से प्राप्त की।

वर्ष 1962 में गुरुकुल झज्जर में आकर मुख्याध्यापक का पद सम्भाला। उसी समय से काशिका और महाभाष्य पढ़ाना आरम्भ कर दिया था जिसके फलस्वरूप आपने अनेक विद्वान् तैयार किए। जैसे स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकिशन जी, डॉ. सतीश (अमेरिका), स्वामी विवेकानन्द प्रभात आश्रम टीकरी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य दयानन्द (कितलाना), स्वामी दिव्यानन्द जी हरिद्वार, स्वामी चन्द्रवेश जी टिटौली, स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली, डॉ. योगानन्द शास्त्री दिल्ली, डॉ. सुरेन्द्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. धर्मवीर अजमेर, विरजानन्द दैवकरणि, आचार्य विश्वपाल दाधिया, डॉ. यज्ञवीर दहिया (रोहतक), स्वामी रामवेश (जीन्द), महेन्द्र कुमार पिलखुआ, आनन्ददेव शास्त्री खेड़ीजट, डॉ. आनन्द कुमार गृह मंत्रालय दिल्ली, डॉ. कृष्णदेव सारस्वत उड़ीसा, डॉ. विक्रम कुमार विवेदी, आचार्य विजयपाल (मकड़ौली कलां, रोहतक) आदि दर्जनों शिष्यों को पढ़ाया। तत्पश्चात् आपने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान पद को सुशोभित किया। सभा के वेदप्रचार की गतिविधियों को गांव-गांव में घूम कर चरम सीमा तक पहुंचाया तथा अनेक पाखण्डों का जम कर विरोध किया। बाद में पूज्य आचार्य जी जुलाई 2012 से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे तथा वर्तमान समय में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ रोहतक में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे थे। अचानक सैर के समय गिरने से आचार्य जी का स्वर्गवास हो गया। उनकी स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से श्रद्धांजलि सभा रविवार 31 जनवरी 2016 के अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान सुरेश चन्द्र आर्य, मंत्री प्रकाश आर्य, उप मंत्री श्री विनय आर्य एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य सम्मलित हुए। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल जी की ओर से शोक प्रस्ताव श्री विनय आर्य जी ने पढ़कर सुनाया।

-रामपाल आर्य, मन्त्री, हरियाणा सभा

पृष्ठ 1 का शेष

राम पर नहीं ...

ने अपनी पत्नी सीता का अपहरण करने वाले दुष्ट रावण को खोजकर उसे यथोचित दंड दिया। उस काल की सामाजिक मर्यादा भी देखिये कि सीता का अपहरण करने के बाद भी रावण में इतना शिष्टाचार था कि बिना सीता की अनुमति के रावण ने सीता को स्पर्श करने का साहस न किया। फिर यह कैसे सम्भव है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी महाराज जो उस काल में आर्य शिरोमणि कहे जाते थे, सीता पर एक अज्ञानी के समान शक करते हैं,अग्नि परीक्षा करवाते हैं, प्रतिज्ञा करवाते हैं और एक धोबी के कहने पर वन में जाने का आदेश दे देते हैं। रामायण में पहले से लेकर छठे कांड तक नारी जाति के सामाजिक अधिकारों का वर्णन प्रभावशाली रूप में मिलता हैं जैसे कौशल्या का महलों में रहकर वेद पढ़ना एवं अग्निहोत्र करना, कैकई का दशरथ के साथ सारथि बनकर युद्ध में भाग लेना, सीता द्वारा शिक्षा ग्रहण कर स्वयंवर द्वारा अपने वर को चुनना आदि।

नारी के इस सम्मानजनक स्थान के ठीक विपरीत सातवें कांड में पुरुष द्वारा नारी जाति पर संदेह करना, उसकी परीक्षा करना, उसे घर से निष्कासित करना यही दर्शाता हैं कि मध्य काल में भी नारी को हेय की वस्तु समझा जाता था। यह उसी काल का प्रक्षेप किया गया है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि रामायण का उत्तर कांड प्रक्षिप्त है। छठे कांड को समाप्त करते समय कवि वाल्मीकि ने फलश्रुति रावणवध के साथ रामायण का अंत कर दिया है फिर सातवें कांड के अंत में दोबारा से फलश्रुति का होना संदेहजनक है क्योंकि एक ही ग्रन्थ में दो फलश्रुति नहीं होती। श्री रामचंद्र जी को आरम्भ के 6 कांडों में (कुछ एक प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़कर) वीर महापुरुष दर्शित किया गया है, केवल सातवें में उन्हें विष्णु का अवतार दर्शाया गया है जोकि विषयांतर होने के कारण प्रक्षिप्त सिद्ध होता है।

सातवें कांड में ऐसे अनेक उपाख्यान हैं जिनका रामायण की मूल कथा से किसी भी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं हैं जैसे ययाति नहुष की कथा, वृत्र वध, उर्वशी-पुरुरवा की कथा आदि। रावण और अन्य राक्षसों का वध पहले ही हो चुका था फिर सातवें कांड में रावण का इंद्र से युद्ध, राक्षसों की उत्पत्ति का वर्णन है। हनुमान राम मिलन पहले ही हो चुका था फिर सातवें कांड में हनुमान के यौवन काल का उल्लेख अप्रासंगिक प्रतीत होता है। विदेशी विद्वान हरमन जैकोबी अपनी पुस्तक दास रामायण में लिखते हैं कि 'जैसे हमारे अनेक पूजनीय पुराने गिरिजाघरों में एक नई पीढ़ी ने कुछ न कुछ नया भाग बढ़ा दिया है और कुछ पुराने भाग की मरम्मत करवा दी है और फिर भी असली गिरिजाघर की रचना को नष्ट नहीं होने दिया है इसी प्रकार भाटों की अनेक पीढियों ने असली रामायण में बहुत कुछ बढ़ा दिया है, जिसका एक-एक अवयव अन्वेषण की आँख से छुपा हुआ नहीं हैं। फ जैकोबी साहिब भी स्पष्ट रूप से रामायण में प्रक्षिप्त भाग को मान रहे हैं। एक और रामायण में श्री राम का केवट, निषाद राज, भीलनी शबरी के साथ बिना किसी भेद भाव के साथ सद्व्यवहार है वहीं दूसरी ओर सातवें कांड में शम्बूक पर शूद्र होने के कारण अत्याचार का वर्णन है। दोनों बातें आपस में मेल नहीं खातीं इसलिए इससे यही सिद्ध होता है कि शम्बूक वध वाली उत्तर कांड की कथा प्रक्षिप्त है। अत: इस प्रकार के मुकदमों के बजाय वकील चंदन कुमार सिंह को आज उन गरीब महिलाओं की आवाज बनना चाहिए जो गरीबी के कारण अपने शोषण की आवाज नहीं उठा पा रही हैं।

आर्यवीर दल का 87वां स्थापना दिवस सम्पन्न

प्रीत विहार स्थित भारती पब्लिक स्कूल स्वास्थ्य विहार में दिनांक 26 जनवरी 2016 को आर्यवीर दल के वरिष्ठ उपप्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की पाखंड और अन्धविश्वास उन्मूलन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। एक शाम ब्र. राज सिंह आर्य के नाम आयोजित इस कार्यक्रम में आर्यवीरों को आशीर्वाद देने हेतु आर्य जगत के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी, माननीय करण सिंह तंवर आर्य समाज के पूर्व पुरोहित एवं उपदेशक वर्तमान में राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह,आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, गुरुकुल गौतम नगर, आर्य केन्द्रीय सभा, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, इत्यादि के

पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आर्यवीर दल के युवा वीर श्री जगवीर आर्य, श्री सुन्दर आर्य, श्री बृहस्पति आर्य, श्री जितेन्द्र भाटिया, श्री विरेश आर्य, श्री प्रेम आर्य ने पुष्पमालाओं से सबका स्वागत किया व श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने अपनी ओर से आर्य पुरोहितों को सम्मान राशि व साहित्य भेंट किया। ठाकुर विक्रम सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा महाशय धर्मपाल जी ने ओ३म् की ध्वजा लहराकर युवा आर्यवीरों में जोश भर दिया।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि 'ब्र. राजसिह आर्य से मेरे प्यार व उनके द्वारा आर्यवीर दल के किए कार्यो को मेरी आत्मा जानती है। आर्यवीरो आपको जब भी मेरी जरूरत हो मैं आपके साथ हूं।' दि. आ. प्र. सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा 'राजसिंह आर्य जी कहा करते थे कि जिस समाज में आर्यवीर दल नहीं वह बांझ के समान है अत: जिन समाजों में आर्यवीर दल की शाखा नहीं है वहां शीघ्र शाखा शुरू करने का आर्यजन काम करें।' मनुर्भव विद्यालय के संचालक श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि मनुर्भव विद्यालय से निकले छात्र पाखण्ड और अन्धविश्वासों से लड़ने में समर्थ होंगे। कार्यक्रम में आर्यवीर दल शाखा प्रीतविहार, यमुना विहार, रानीबाग, विकासपुरी, मंगोलपुरी के आर्यवीरों व आर्य वीरांगनाओं की शानदार प्रस्तुति दर्शकों द्वारा खूब सराही गयी। **-सुरेन्द्र रैली**

झज्जर में माता धापा देवी की पुण्य तिथि पर यज्ञ-भजन-प्रवचन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व. माता धापा देवी की पुण्य तिथि के अवसर पर यज्ञ- भजन- प्रवचन- अभिनन्दन समारोह जनवरी 2016 को सम्पन्न हुआ। संयोजक महाशय रतीराम आर्य रहे व यज्ञ संचालन 4 वर्षीय बेटी मनस्विनी व 8 वर्षीय अनमोल आर्य ने किया। समारोह के मुख्य वक्ता जीन्द से पधारे प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. सूर्य देव योगाचार्य रहे। समारोह में 90 वर्षीय श्रीमती अशरफी देवी व श्रीमती केसर देवी को सम्मानित किया गया। **-सुभाष आर्य**

शोक समाचार

श्री हरी चन्द डुडेजा दिवंगत

आर्य समाज पश्चिमपुरी के पूर्व प्रधान श्री हरी चन्द डुडेजा का दिनांक 6 जनवरी

2016 प्रात: 6 बजे यज्ञ की तैयारी करते समय अचानक सांस रुकने के कारण 86 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। आप कर्मठ कार्यकर्त्ता व 365 दिन प्रतिदिन प्रात: हवन से पहले समाज में पहुंचने वाले महाविभूति थे। दिनांक 9 जनवरी को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में श्री राजेन्द्र दुर्गा संरक्षक व उप प्रधान, आचार्य कृष्ण शास्त्री, धर्माचार्य श्री शिव कुमार जी, आर.डब्लू. ए. के प्रधान श्री कृष्ण कुमार भाटिया इत्यादि महानुभावों ने हरी चन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज कृष्णा नगर के उपप्रधान श्री जगदीश मल्होत्रा जी को मातृ शोक

आर्य समाज कृष्णा नगर के उपप्रधान श्री जगदीश मल्होत्रा जी की पूज्य माता श्रीमती श्याम प्यारी जी का दिनांक 25 जनवरी 2016 को 90 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं। दिनांक 5 फरवरी 2016 सिटी प्लाजा, मलवाल रोड, फिरोजपुर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्ष साहित्य व ऋषि दयानन्द द्वारा रचित साहित्य ने डाला प्रभाव

मेरा जन्म ग्राम- हिम्मतपुर काकामई, जिला-एटा, उत्तर प्रदेश में एक पौराणिक परिवार में हुआ। मुझे लगभग 15 साल की आयु से ही आर्यसमाज के संस्कार मिले। मेरे बड़े भाई श्री ज्ञानवीर आर्य जी आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट में कार्यालयाध्यक्ष थे। उस समय वे जब घर आया करते थे तब आर्यसमाज से सम्बंधित कुछ न कुछ साहित्य अवश्य लाया करते थे। तब मैं उनके द्वारा बनाए गये पुस्तकालय में से अपनी पढ़ाई में से समय निकाल कर आर्ष साहित्य का अध्ययन किया करता था। जिन पुस्तकों को मैं सबसे ज्यादा पढ़ता वे ''सत्यार्थ प्रकाश'', ''ऋषि दयानन्द जीवन चरित्र'', ''आर्य मान्यताएं'', ''गौ-करुणानिधि'' व ''व्यवहारभानु''। इन पुस्तकों को बार- बार पढ़ने पर मेरे दिल में आर्यसमाज के सिद्धांतों ने जगह बना ली और धीरे-धीरे मैं आर्यसमाज की विचार धारा से पूर्णत: परिपूर्ण हो गया। ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र को पढ़ने पर मुझे उनके द्वारा देश व समाज को दिए गए योगदान को विस्तार पूर्वक जाना जिससे मुझे भी सामाजिक जीवन जीने की प्रेरणा मिली और फिर मैंने अपना जीवन आर्य समाज को देने का फैसला ऋषि दयानन्द से प्रेरित होकर लिया। कुछ समय बाद मैं गुरुकुल झज्जर में पढ़ने आ गया और अपनी गुरुकुलीय शिक्षा पूरी करने के बाद मैं गाँव में समाज सेवा के लिए पहुंच गया। मैंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए एक संस्था ''आर्य युवा जागृति संस्थान'' का निर्माण किया और गाँव व आस-पास के क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के अनेक कार्यक्रम विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा समय-समय पर आयोजित किए। आज भी ये कार्यक्रम नियमित रूप से किए जाते हैं। जिससे क्षेत्र में

आर्यसमाज से अनेक लोग प्रेरित होकर संस्था से जुड़े व विशुद्ध आर्यसमाजी बने हैं। मुझे अब अपनी ग्राम पंचायत ने पूर्ण निष्ठा से सेवा करने के कारण अभी हाल ही में हुए ग्राम पंचायत चुनाव में ग्राम प्रधान चुना है। मैंने ग्राम प्रधान बनने के तुरंत बाद गाँव के हित में अनेक फैसले लेकर विकास कार्य शुरू कर दिया है तथा साथ ही साथ ग्राम पंचायत में एक भव्य आर्यसमाज बनाने का भी फैसला लिया है जिसे मै जल्दी ही बनवाने का प्रयास करूंगा। जिसमें नित्य प्रति यज्ञ व साप्ताहिक सत्संग होने के साथ-साथ गाँव में युवाओं को आध्यात्मिक व शारीरिक संस्कार मिलें जिससे युवा अपनी व देश की उन्नति कर सकें। अत: मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को नमन करता हूँ कि उन्होंने अपना पूरा जीवन देश व समाज के लिए देकर अनेक कुरीतियों व पाखंडों को दूर करने के साथ-साथ देश को स्वतंत्र कराया। अत: में गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मैं ऐसे व्यक्तित्व का पथगामी हूँ।

-प्रदीप आर्य, ग्राम प्रधान हिम्मतपुर काकामई, एटा, उ.प्र.

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा।

-संपादक

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

The Divine Sap

"Give us a share of your most beneficent sap like mothers longing with love."

"Today I crave, O Benevolent Lord, for divine sap which is your special grace and is dispensed only by you. I have been enjoying many juicy fruits and tasty fluids in this life. They give pleasure but no bliss. They are the source of ever increasing bondage. when I was born to my mother, you gave a taste of the sap in the shape of milk on which she fed me. You gave the love of her bosom, the nectar of her heart, O Mother of mothers! When I was grown up, you gave the brilliant wisdom to my preceptor that enlightened my intellect. on the ideal ruler of my land, you bestowed justice and kindness which enabled him to be dutiful."

"your divine sap is the most lasting and the most beneficent. It is complete happiness and joy par excellence. It is beauty without corruption. Each one of us has a fountain of the Divine sap in the precints of our heart. May you grant, O Lord that I dive into my Innerself and receive the exhilarating sap for which I have been earnestly asking and pining so far."

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।

उशतीरिव मातरः।। (Av.I.5.2.)

Yo vah sivatamo rasastasya bhajayateha nah.

usatiriva matarah..

The Milch Cows

"The Earth is a milch cow; the fire-diine her calf. May she, with the fire-divine as her calf, yield milk to me as food vigour, fulfilment of my desires, long life, offspring, nourishment and riches."

"The midspace is a milch-cow; the wind, her calf. May she with wind as her calf, yield milk to me as food vigour, fulfilment of my desires, long life, offspring, nourishment and riches?

"The space is a milch-cow; the sun is her calf. May she with the sun as calf, yield milk to me as food, vigour, fulfilmen of my desires, long life, offspring, nourishment and riches."

पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्ज कामं दुहाम्।

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा। (Av.iv.39.2)

Prthivi dhenustasya agnirvatsah

sa me gnina vatsenesamurjam kamam duham.

ayuh pratham prajam posam rayim svaha..

अन्तरिक्षं धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्ज कामं दुहाम्।

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहां।। (Av.iv.39.4)

Antarikasam dhenustasya vayurvatsh

sa me vayuna vatsenesamurjam kamam duham.

ayuh pratham prajam posam rayim svaha..

द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्ज कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा।। (Av.Iv.39.6)

Dyaurdhenustasya adityo vatsah

sa ma adityena vatsenesamurjam kamam duham.

ayuh pratham prajam posam rayim svaha..

Prayers: Simple and Elegant

You are endeavour. May you bestow endeavour on me. You are endurance. May you bestow endurance on me. You are stength. May you bestow strength on me. You are longevity. may you bestow longevity on me. You are audibility. May you bestow audibility on me. You are vision. May you bestow vision on me. You are all-round and whole, protection.

May you bestow all-round and whole protection on me.

आजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा। सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा।।

बलमसि बलं मे दाः स्वाहा। आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा।

श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः स्वाहा। चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा।।

परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा।। (Av.II.17.1-7)

Ojo syojo me dah svaha/Sahosi saho me dah svha..

Balamasi balam me dah svaha/Ayurasyayurme dah svaha..

Srotramasi srotram me dah svaha/Caksurasi caksurme dah svaha

paripanamasi paripanam me dah svaha..

To Be Continue...

प्रेरक प्रसंग

सारा कुल आर्य समाज के लिए समर्पित था

लाहौर में एक सम्पन्न परिवार ने आर्य समाज की तन-मन-धन से सेवा का बड़ा गौरवपूर्ण इतिहास बनाया। इस कुल ने आर्य समाज को कई रत्न दिये। पंडित लेखराम जी के युग में यह कुल आर्य समाजी था, इससे मेरा अनुमान है कि ऋषिजी के उपदेशों से ही यह परिवार आर्य बना होगा। इस कुल ने आर्य समाज को डॉक्टर देवकीनन्दन-जैसा सपूत दिया। डॉक्टर देवकीनन्दन ऐसे दीवाने हैं जिन्होंने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम उर्दू अनुवाद की विस्तृत विषय सूची तैयार की। स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ तथा पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा सम्पादित सत्यार्थ प्रकाश के संस्करणों में तो कई प्रकार के परिशिष्ट तथा विषय-सूचियां दे रखी हैं। इन दो प्रकाशनों से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश की इतनी उपयोगी तथा ठोस विषय-सूची किसी ने तैयार न की। डॉक्टर देवकीनन्दनजी की बनाई सूची 17-19 पृष्ठ की है। हिन्दी में तो 30 पृष्ठ भी बन सकते हैं। इससे पाठक अनुमान लगा लें कि वह कितने लगनशील आर्य थे। एक डॉक्टर इतने स्वाध्याय प्रेमी हों यह अनुकरणीय बात है।

इसी कुल में डॉक्टर परमानन्द हुए हैं। आप विदेश से डेंटल सर्जन बनकर आये। पैतृक सम्पत्ति बहुत थी, किसी और काम की कोई आवश्यकता ही न थी। दिन-रात आर्य समाज की सेवा ही उनका एकमात्र काम था। आप आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान भी रहे।

आपने लाहौर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए बहुत सम्पत्ति बना दी। इससे सभा का गौरव बढ़ा और साधन भी बढ़े। आर्य जगत् में आप बहुत पूज्य दृष्टि से देखे जाते थे। वे न लेखक थे और न वक्ता, परन्तु बड़े कुशल प्रबन्धक थे। उन्हें प्रायः आर्य समाज के उत्सवों पर प्रधान बनाया जाता था। प्रधान के रूप में सभा का संचालन बड़ी उत्तमता से किया करते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रथम वेदप्रचार अधिष्ठाता वही थे। वेद प्रचार निधि उन्हीं की चलाई हुई है। जब समाजें सभा से उपदेशक मांगती तो डॉक्टर परमानन्द उनसे कुछ राशि मांगते थे। धीरे-धीरे समाजें अपने-आप सभा को वेदप्रचार निधि के लिए राशि देने लग पड़ीं।

अन्तिम दिनों में उन्हें शरीर में पीड़ा रहने लगी। वे चारपाई पर लेटे-लेटे भी आर्य समाज की सेवा करते रहते। दूरस्थ स्थानों से आर्य भाई उनके पास प्रचार की समस्याएं लेकर आते और वे सबके लिए प्रचार की व्यवस्था करवाते थे। बड़े-छोटे आर्यों का अतिथ्य करने में उन्हें आनन्द आता था।

इस कुल में श्री धर्मचन्दजी वकील प्रथम श्रेणी चीफ कोर्ट हुए हैं। आप ही डॉक्टर परमानन्दजी के भतीजे और श्री मुकन्दलालजी इंजिनियर के सुपुत्र थे। आप वर्षों पंजाब प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष रहे। आपने सभा की सम्पत्ति की बहुत संभाल की। पंजाब भर से किसी भी आर्य भाई को लाहौर में वकील की आवश्यकता पड़ती तो श्री धर्मचन्द सेवा के लिए सहर्ष आगे आ जाते। वे सबकी खुलकर सहायता करते।

वे चरित्र के धनी थे। निर्भीक, निष्कपट, सिद्धान्तवादी पुरुष थे। अब्दुलगफूर जब धर्मपाल बनकर आर्य समाज में आया तो वह डॉक्टर चिरंजीवजी की कोठी में रहने लगा। उसे आर्य समाज में जो अत्यधिक मान मिला, वह इसे पचा न सका। उसका व्यवहार सबको अखरने लगा। उसे कहा गया कि वह कोठी से निकल जाए। उसने डॉक्टर चिरंजीवजी भारद्वाज के बारे में अपमानजनक लेख दिये।

कुछ मित्रों का विचार था कि उसे न्यायालय में बुलाया जाए। कुछ कहते थे कि इससे वह पुनः मुसलमान हो जाएगा, इससे आर्य समाज का अपयश होगा। श्री धर्मचन्दजी का मत था चाहे कुछ भी हो पाजी धर्मपाल को उसके किये का दण्ड मिलना ही चाहिए।

मानहानि का अभियोग लम्बे समय तक चला। धर्मपाल अभियोग मे हार गया। सत्य की विजय हुई। धर्मपाल को लज्जित होना पड़ा। उसे मुंह छिपाना पड़ा। श्री धर्मचन्द जी वकील युवा अवस्था में ही चल बसे। वे आर्यसमाज के कीर्ति-भवन की नींव का एक पत्थर थे।

साभार- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित पुस्तक तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं मार्मिक वक्तव्य

१८७५ में मुम्बई में जब कई उत्साही सज्जनों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के समक्ष नया 'समाज' स्थापित करने का प्रस्ताव रखा, तब उस दीर्घदृष्टा ऋषि ने अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए और उन लोगों को सावधान करते हुए कहा - ''भाई, हमारा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूं और हमारे भारत में पच्चीस कोटि 'उस समय की भारत की जनसंख्या' आर्य हैं। कई-कई बात में किसी-किसी में कुछ-कुछ भेद है, सो विचार करने से आप ही आप छूट जाएगा। मैं संन्यासी हूं और मेरा कर्तव्य यही है कि जो आप लोगों का अन्न खाता हूं, इसके बदले जो सत्य समझता हूं, उसका निर्भयता से उपदेश करता हूं। मैं कुछ कीर्ति का रागी नही हूं। चाहे कोई मेरी स्तुति करे या निन्दा करे, मैं अपना कर्तव्य समझ के धर्म-बोध कराता हूं। कोई चाहे माने वा न माने, इसमें मेरी कोई हानि लाभ नहीं है।... आप यदि समाज से पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो, तो समाज स्थापित कर लो। इसमें मेरी कोई मनाई नहीं है। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जाएगा। मैं तो जैसा अन्य को उपदेश देता हूं, वैसा ही आपको भी करूंगा और इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं। इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पाई जाए तो युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इसी को भी सुधार लेना। यदि ऐसा न करोगे तो आगे यह भी एक 'मत' (सम्प्रदाय) हो जाएगा और इसी प्रकार से 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' करके इस भारत में नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित होके, भीतर-भीतर दुराग्रह रखके धर्मान्ध होके लड़कर नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है, इसमें यह भी एक मत बढ़ेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष में नाना मतमतान्तर प्रचलित हैं, तो भी वे सब वेदों को मानते हैं। इससे वेदशास्त्र रूपी समुद्र में यह सब नदी-नाव पुनः मिला देने से धर्म ऐक्यता होगी और धर्म ऐक्यता से सांसारिक और व्यावहारिक सुधारणा होगी और इससे कला-कौशल आदि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्य मात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपना धर्म बल से अर्थ, काम और मोक्ष मिल सकता है।'' कुछ प्रश्न, जिनके उत्तर और समाधान हमें स्वयं ही ढूंढने होंगे -

1. क्या हम आर्यसमाज में 'यथोचित व्यवस्था' रख पाए हैं?
2. क्या आर्यसमाज 'गड़बड़ाध्याय' नहीं हो गया है?
3. कहीं हम ऋषि दयानन्द को 'सर्वज्ञ' मानकर 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' वाला व्यवहार तो नहीं करने लगे हैं?
4. क्या अन्यों की दृष्टि में आर्यसमाज भी एक मत-पन्थ-सम्प्रदाय सदृश नहीं है?
5. क्या आर्यसमाज देश में धर्म-ऐक्यता निर्माण करने के कार्य में कुछ सार्थक कर पाया है?
6. क्या आर्यसमाज अपने ही संगठन को एकता के सूत्र में आबद्ध रखने में विफल नहीं रहा है?
7. ऋषि दयानन्द विद्यमान होते तो हमारी वर्तमान स्थिति को देखते हुए हमें क्या उपदेश करते?
8. क्या आज हम ऋषि दयानन्द के सत्योपदेश को भी व्यावहारिक स्तर पर मानने को तैयार होते?

(सन्दर्भ ग्रन्थ: 'मुम्बई आर्य समाज-नो इतिहास', 'गुजराती', लेखक दामोदर सुन्दरदास, पृष्ठ 8-9, संस्करण 1933 ई., 1989 वि.सं., प्रस्तुतकर्ता: भावेश मेरजा

आर्य समाज अलवर में मकर संक्रांति पर पांच कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज अलवर में श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर की अध्यक्षता में दिनांक 17 जनवरी 2016 को मकर संक्रांति पर्व पांच कुण्डीय यज्ञ के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।-**प्रदीप आर्य, प्रधान**

आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश के तत्त्वावधान में श्री राम कथा सम्पन्न

आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश एवं आर्य स्त्री समाज ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली दिनांक 22 से 26 जनवरी 2016 के मध्य संगीतमयी श्री राम कथा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन उद्योगपति एवं समाज सेवी श्री रमेश यादव ने किया एवं कथा आचार्य कुलदीप जी ने प्रस्तुत की।

-सुरेश आर्य, मंत्री

दा हेग, नीदरलैंड में ''वैदिक मंदिर'' का निर्माण

दी हेग नगर स्थित आर्य समाज नीदरलैंड (आसन) एक बहुक्रियात्मक, अध्यात्मक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक केन्द्र एवं भव्य वैदिक मंदिर बनाने का निर्णय लिया है। यह मंदिर समस्त मापदण्डों को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाएगा। इस विशाल आकर्षक भवन में जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए तथा समाज उपयोगी गतिविधियों को संचालित करने के लिए विभिन्न कक्षाओं का निर्माण किया जाएगा। इस भव्य तथा महत्वाकांक्षी योजना पर लगभग 12 लाख यूरो से अधिक व्यय होने का अनुमान है। इस वैदिक मंदिर भवन निर्माण हेतु शिला-न्यास एवं नामपट्ट का उद्घाटन दिनांक 7 फरवरी 2016 को होगा। इसी दिन धन संग्रहण का कार्यक्रम निर्धारित किया जाएगा। **-सूर्य प्रसाद बीरे, अध्यक्ष, मो. +06-50804311**

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

दिनांक 12-13 मार्च 2016 महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ महाविद्यालय प्रांगण में मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के साधु-संन्यासी, हरियाणा तथा भारत सरकार के राजनेतागण, वैदिक विद्वानों को आमंत्रित किया जा रहा है।

निवेदक: राजवीर छिक्कारा मंत्री, मो. 9811778655

नासा में लगती है 15 दिन की संस्कृत कक्षा

अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा (नेशनल एकेडमी फॉर स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) में भर्ती होने वाले वैज्ञानिक प्रशिक्षण काल में 15 दिन की संस्कृत कक्षा का अयोजन किया जाता है। इन कक्षाओं में आर्य भट्ट, वराहमिहिर जैसे भारतीय विद्वानों के वैज्ञानिक सिद्धांतो के अलावा मय दानव का दिया सूर्य सिद्धांत पढ़ाया जाता है। सूर्य सिद्धांत में ढाई हजार वर्ष पहले के सौरमण्डल के सम्बन्ध में दिये गये तथ्य और आज के वैज्ञानिक तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। नासा के अतिथि वैज्ञानिक दिल्ली के डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेयका कहना है कि भारत का खगोल विज्ञान इतना अधिक समृद्ध था कि उसे अब वेद और वेदांग के जरिए वैज्ञानिक सीख रहे हैं। वेदों के अनुसार आठ हजार साल पहले पृथ्वी अपने अक्ष पर 22.1 डिग्री झुकी हुई थी। (वर्तमान में 23.5 डिग्री पर झुकी है) तब एक साल 360 दिन का होता था। वर्ष 11800 ई. आने पर पृथ्वी 24.5 डिग्री झुक जाएगी तब एक साल 368 दिन का होगा।'' **साभार-राजस्थान पत्रिका**

संस्कृतम्

गीताया उपदेशामृतम्।

महाभारत युद्धे अर्जुनं विषण्णहृदयं दृष्ट्वा तस्य कर्तव्यबोधनार्थं भगवता कृष्णेन य उपदेशो दत्तः, स एव 'श्रीमद्भगवद्गीता' इति नाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति। गीतायां भगवता कृष्णेन प्रायः सर्वमपि मनुष्यस्य आवश्यकं कर्तव्यं प्रतिपादितमस्ति। गीतायां ये उपदेशाः सन्ति, तेषां मुख्या एते सन्ति-

(1) अयमात्माऽजरोऽमरश्चास्ति। नायं जायते, न च म्रियते। केनापि प्रकारेण नायं नाशं प्राप्नोति। यथा जीर्णवस्त्रमुत्तार्य नवं वस्त्रं धार्यते, तथैव नवारीरधारणमस्ति।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।1।।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।।2।।

आत्माऽयम् अजरोऽमरश्चास्ति। अतः कदाचिदपि शोको न करणीयः।

(2) मनुष्यः स्वकर्मानुसारं पुनर्जन्म प्राप्नोति। मर्त्यः कर्मानुसारं म्रियते च।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्चेऽर्थे, न त्वं शोचितुमर्हसि।।3।।

(3) मनुष्यैः सदा निष्कामभावनया कर्म करणीयम्। कर्म कदापि न त्याज्यम्।

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलुषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।4।।

नियतं कुरु कर्म त्वं, कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्राऽपि च ते, न प्रसिध्येदकर्मणः।।5।।

(4.) सवैः मनुष्यैः सदा स्वकर्मपालनीयम्। स्वधर्मो न कदाचिदपि त्याज्यः।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।।6।।

(5.) मनुष्यैः सदा स्वकीर्तिरक्षा करणीया। मरणं वरमस्ति, परन्तु न कीर्तिनाशः। संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।।4।।

(6.) शुभाशुभकर्मणः कदापि नाशो न भवति। शुभं कर्म सदा भयात् त्रायते।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति, प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य, त्रायते महतो भयात्।।7।।

गीतायां ये उपदेशा दत्ताः सन्ति, ते सर्वे एव जीवनस्योन्नतिकारकाः। गीताया उपदेशानुकूलम् आचरणं कृत्वा सर्वैरपि स्वजीवनमुन्नतं कर्तव्यम्। एतदर्थं गीतायाः पठनं पाठनं चापि कार्यम्। 'गीता सुगीता कर्तव्या' इति।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

1 फरवरी 2016 से 7 फरवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4 फरवरी 2016/ 5 फरवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 फरवरी, 2016

आर्य सन्देश के सम्मानीय सदस्यों से निवेदन

आर्य सन्देश के समस्त सम्मानीय सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य सन्देश अपने समस्त सदस्यों का डाटा अपडेट कर रहा है। अत: आप अपना मोबाईल नम्बर एवं ईमेल पता, सदस्य संख्या के साथ शीघ्र अतिशीघ्र भेजने की कृपा करें जिससे आपका नाम रिकार्ड में अपडेट किया जा सके। -सम्पादक

सदस्यता शुल्क भेजें

आर्य सन्देश के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क संबंधी जानकारी के लिए व्यस्थापक श्री एस.पी. सिंह (9540040324) अथवा श्री जियालाल (9650183336) से संपर्क करें। -सम्पादक

आवश्यकता है

आर्य समाज की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ द्वारा भारत के आदिवासी जनजातीय क्षेत्रों में संचालित किए जा रहे छात्रावासों, बालवाड़ियों, विद्यालयों, गुरुकुलों में वैदिक शिक्षा अध्यापन के लिए सेवाभावी वानप्रस्थियों एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों/संन्यासियों की आवश्यकता है। जो सेवा भाव से वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर सकें। आवास, भोजन एवं सम्माजनक वेतन, सेवा श्रम संघ की ओर से प्रदान किया जाएगा। इच्छुक संपर्क करें।

जोगेन्द्र खट्टर मो. 9810040982

प्रतिष्ठा में,

''घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ'': अपने घर व समाज को यज्ञमय बनाएं

पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि में लिखा है- ''यज्ञ से सुगन्ध कारक, पुष्टि कारक, रोग नाशक और कीटाणु नाशक चार प्रकार की वायु निकलती हैं जो सम्पूर्ण निर्जीव-सजीव प्राणियों को प्रभावित करती हैं।'' भोपाल गैस त्रासदी से यह सिद्ध हो गया था कि मानव शरीर पर वायु का सबसे शीघ्र प्रभाव पड़ता है। जैसी वायु हम ग्रहण करेंगे वैसा ही हमारा स्वास्थ्य होगा वैसी ही हमारी मानसिकता होगी और वैसे ही हमारे विचार होंगे। शुद्ध वायु के लिए जरूरी है कि हम सब रोज नहीं तो कम से कम सप्ताह में एक बार, सप्ताह में नहीं तो 15 दिन में, 15 दिन में न सही महीने में कम से कम एक बार 'यज्ञ' अवश्य करें जिससे घर का वातावरण तो शुद्ध होगा ही परिवार भी संस्कारी बनेगा। इस शुभ कार्य में देरी क्यों अभी फोन उठाइये और श्री सत्य प्रकाश जी को मो. 09650183335 पर फोन लगाईये। वे आपके बताये पते पर आपके द्वारा निर्धारित तिथि व समय पर पहुंचकर यज्ञ सम्पन्न करायेंगे और हां यज्ञ में होने वाला व्यय भी आप नहीं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वहन करेगी, क्योंकि सभा ने इस नेक कार्य के लिए 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' नामक योजना प्रारम्भ की हुई है,जिसका लाभ कोई भी व्यक्ति, धर्म-सम्प्रदाय प्राप्त कर सकता है।

शुद्ध तांबे से निर्मित

वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-

वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की

अमूल्य देन उर्दू भाषियों के लिए

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश

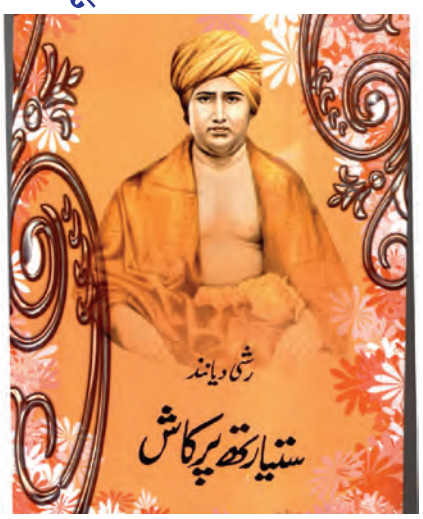

प्राप्ति स्थान:- वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह